

रामायण आरती

आरती श्री रामायण की ।
कीरति कलित ललित सिय पी की ॥
गावत ऋत्विक् मुनि नारद ।
बालमीक बिद्यान बिसारद ॥
सुक सनकादि सेष अरु सारद ।
बरनि पवनसुत कीरति नीकी ॥
गावत वेद पुरान अष्टदस ।
छयो सास्त्र सभ ग्रंथन को रस ॥
मुनि जन धन संतन को सरभस ।
सार अंस संमत सभही की ॥
गावत संतत संभु भवानी ।
अरु धटसंभव मुनि बिद्यानी ॥
व्यास आदि कबिबर्ज भवानी ।
कागबुसुंदि गरुड के ही की ॥
कलि भल हरनि बिषय रस डीकी ।
सुभग सिंगार मुक्ति जुवती की ॥
दहन रोग भव भूरि अभी की ।
तात मात सभ बिधि तुलसी की ॥